शासकीय महाविद्यालय पाटन ,जिला – दुर्ग (छ0ग0)

मॉडल परीक्षा 2020–21

कक्षा का नाम – बी.ए./बी.एस–सी./बी.कॉम भाग एक

विषय – हिन्दी भाषा

पूर्णांक : 75

नोट :– सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

प्रश्न 1. (क) कुशल विस्तारक के गुण लिखिए ? 8

अथवा

पल्लवन का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसकी परिभाषा लिखिए ?

(ख) पत्र के प्रकार बताते हुए अच्छे पत्र की विशेषताएं बताइये। 7

अथवा

किसी पुस्तक विक्रेता को एक पत्र लिखिए जिसमें आपके पाठ्यक्रम की सभी पुस्तकों को भेजने का आदेश हों।

प्रश्न 2.(क) निम्नलिखित के विलोम शब्द लिखिए – (कोई – 5) 5

(1) अनाथ (2) इहलोक (3) दुराचारी
(4) विजय (5) आस्था (6) प्रकाश ।

(ख) निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए – (कोई – 5) 5

(1) प्रसंशा (2) शाशन (3) ज्येष्ट
(4) कवियत्री (5) निछावर (6) इकइस

(ग) निम्नलिखित शब्दों के तीन–तीन पर्यायवाची लिखिए – (कोई – 5) 5

(1) जंगल (2) गंगा (3) आकाश
(4) कमल (5) कपड़ा (6) पर्वत

प्रश्न 3. नागरी लिपि के प्रारंभिक स्वरूप को समझाते हुए नागरी के अन्य नाम बताइये। 15

अथवा

हरिशंकर परसाई जी का जीवन परिचय बताते हुए '' भोलाराम का जीव '' कहानी का सारांश लिखिए।

प्रश्न 4.(क) कम्प्यूटर का महत्व निरूपित करते हुए कम्प्यूटर में हिन्दीं का अनुप्रयोग किस विधि से किया जा रहा हैं ? तर्कसंगत विवेचना कीजिए। 10

अथवा

कम्प्यूटर टेक्नोलॉजी के भावी विकास की दिशाएं लिखिए।

(ख) निम्नलिखित अंग्रेजी पदनामों के हिन्दी रूप लिखिए – 5

(i) Collector (ii) Governor (iii) Archarological Officer
(iv) Assistant (v) Speaker .

प्रश्न 5. (क) संक्षेपण विधि का सम्यक विवेचन करते हुए बताइये कि इसमें किन बातों से बचना चाहिए। 8

(ख) निम्नांकित गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए एवं इसका सारांश लगभग एक तिहाई भाग में लिखिए । 7

मनुष्य जीवन में सर्वत्र प्रकाश नही है, अंधकार भी हैं । मनुष्य में जैसे क्षमता है, वैसे ही दुर्बलता भी। मनुष्य का पतन हो सकता है, इसीलिए उसके उत्थान – पतन दृष्टिगोचर होते है। हिन्दी के कितने विद्वान मनुष्य – जीवन के अंधकार मय भाग को साहित्य में देखना नहीं चाहते । पाप की वीभत्स लीलाओं को वे साहित्य में से दूर ही रखना चाहते हैं, परन्तु जीवन की पूर्णावस्था प्राप्त करने के लिए हमें अपूर्णावस्था के भीतर से होकर ही जाना पड़ेगा । मनुष्य की क्षमता यही हैं कि वह पतितावस्था से ही उच्चतम अवस्था को पहुँच सकता हैं। उसकी दुर्बलता यह हैं कि वह उच्चतम अवस्था प्राप्त करके भी भ्रष्ट हो सकता हैं। दुराचारियों की जिन वीभत्स कृतियों से हमारा चित्त उद्विग्न हो उठता हैं, में भी जीवन की एक –एक अव्यवस्था की सूचना देने के लिए आवश्यक हैं। मनुष्य के लिए अधःपतन की पराकाष्ठा जितनी सच्ची हैं, उतना ही सच्चा अभ्युत्थान भी। यही कारण है कि जिन विश्व कवियों ने हमें जीवन की उच्चतम अवस्था दिखलाई हैं, उन्होनें जीवन की निम्नतम अवस्था की भी उपेक्षा नहीं की। यही नहीं, उन्होनें श्रेष्ठ चरित्रों में भी मनुष्य की स्वाभाविक दुर्बलता प्रदर्शित कर रही हैं।

000